www.aijeh.com

ISSN : 2231 - 380X

UGC Approved Serial No.: 63169

AITEA INTERNATIONAL Journal of Education & Humanities

All India Teacher Educators Association®

Vol. 7 (No. 14) October- March 2018

Contents

A Comparative Study of Academic Quality in Govt. and Private School at Primary Level
Dr. S. K. kaushal 1

Innovative Skills and Strategies to Handle Various Classroom Challenges
Dr. Kusum 8

Entrepreneurship Development: Challenges & Opportunities
Dr. Krishan Murari 16

Academic Achievement of Secondary School Students in Relation Their Self-Concept
Dr. Umender Malik, Ms. Seema 21

Online Examination: Advantages and Challenges
Dr. Kusum, Arvind Kumar Gill 26

A Study of Teaching Effectiveness of Secondary Teachers in Relation to Their Professional Commitment Towards Society
Dr. Dinesh Kumar Sharma, Dr. Umender Malik 31

A Study of Teaching Effectiveness of Secondary Teachers in Relation to their Professional Commitment towards Profession
Dr. Dinesh Kumar Sharma, Dr. Umender Malik 35

A Study of Teaching Effectiveness of Secondary Teachers in Relation to Their Professional Commitment Towards Students Interest and Welfare
Dr. Dinesh Kumar Sharma, Dr. Umender Malik 39

A Study of Teaching Effectiveness of Secondary Teachers in Relation to Their Professional Commitment Towards Basic Human Values
Dr. Dinesh Kumar Sharma, Dr. Umender Malik 43

शैक्षिक जागरूकता के प्रचार एवं प्रसार में गैर-सरकारी संगठनों का योगदान
डा० दिनेश कुमार शर्मा, डा० राजकुमार 47

ENTREPRENEURSHIP DEVELOPMENT: CHALLENGES & OPPORTUNITIES

Dr. Krishan Murari*

Abstract

Entrepreneurship has once again gained prominence amongst academics and practitioners. In this paper , the author explore the conceptual foundations of Entrepreneurship by examining the literature on Entrepreneurship and other disciplines that contribute to the knowledge of Entrepreneurship. A Entrepreneurship development framework is proposed that builds on other challenges & Opportunities process models .

Research issues as well as On Entrepreneurship Development : Challenges & Opportunities.

INTRODUCTION

Entrepreneurship his becoming increasingly import throughout the world. True Economist josiph schumpeters's view of Entrepreneurship as " creative destruction," much of the world from eastern Europe to south America to Asia envisions Entrepreneurial ventures as the means to build successful free market economics . New Entrepreneurial Ventures are emerging daily in the countries. Unfortunately, not every country makes it easy to start a new business. Even thought Entrepreneurship is more difficult in many other parts of the world then in the United States, the situation his changing . for example , Investors are flocking to young, fast – growing companies in Europe. The number of European Entrepreneurs has been gradually increasing though the 1990s politicians are beginning to see Entrepreneurs as part of a solution to unemployment rather them as grasping exploiters.

संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल

ISSN 0975-735X

शोध दिशा

58

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

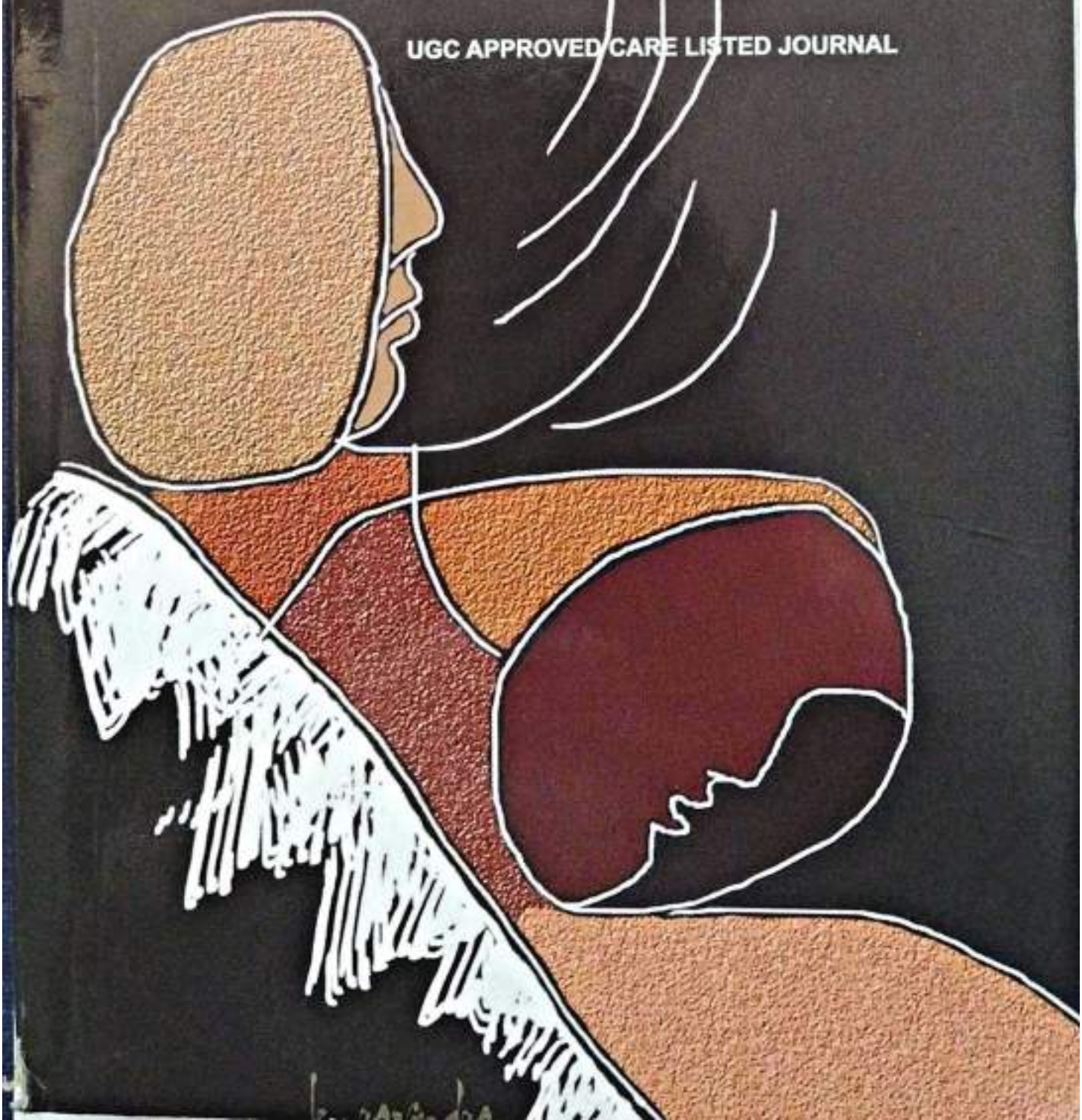

में सक्रियता : एक ऐतिहासिक अध्ययन/ **देविका मोहन, डॉ॰ नीरज रूवाली** 390
बिजनौर जिले के सरकारी एवं गैरसरकारी अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय के ICT विषय में कंप्यूटर की उपयोगिता का विश्लेषणात्मक अध्ययन/ **श्रीमती शीरीन फातिमा** 397
संगीत एवं योग का अंतर्संबंध/ **डॉ॰ ममता यादव** 402
आपराधिक मामलों में न्याय प्रदान कराने में अभियोजन की भूमिका/ **राम कुमार खत्री** 405
छत्तीसगढ़ की लोककला : एक अध्ययन/ **डॉ॰ बृजेन्द्र पांडेय** 411
राही मासूम रजा के उपन्यासों में देश-विभाजन : एक दृष्टि/ **डॉ॰ जया** 416
कहानी 'मोहनदास' में दलित छात्र जीवन का आत्मसंघर्ष/ **अमिता कुमारी** 421
नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ/ **रोशनलाल** 426
युगीन यथार्थ के आइने में हिंदी दलित आत्मकथा/ **डी॰ अम्सावेनी** 431
तुलनात्मक साहित्य : एक अध्यनयन/ **डॉ॰ अंशिता शुक्ला** 435
गीत और नवगीत : अंतर्वस्तु विवेचना/ **डॉ॰ मनोरमा मिश्रा** 439

समीक्षा समिति

प्रो॰ हरिमोहन, कुलपति, जे॰एस॰विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद (फिरोजाबाद) उ॰प्र॰
प्रो॰ खेमसिंह डहेरिया, कुलपति, अटलबिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (म॰प्र॰)
प्रो॰ आदित्य प्रचंडिया, पूर्व प्रोफेसर हिंदी विभाग, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, दयालबाग, आगरा (उ॰प्र॰)
प्रो॰ अनिलकुमार जैन, पूर्व अध्यक्ष हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज॰)
प्रो॰ हरिमोहन बुधौलिया, पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष हिंदी अध्ययन शाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म॰प्र॰)
प्रो॰ शंभुनाथ तिवारी, हिंदी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ (उ॰प्र॰)
प्रो॰ चंद्रकांत मिसाल, अध्यक्ष हिंदी विभाग, एस॰एन॰डी॰टी॰ महिला विद्यापीठ, पुणे (महा॰)
डॉ॰ शशिप्रभा, अध्यक्ष हिंदी विभाग, वर्धमान कॉलेज, बिजनौर (उ॰प्र॰)

 ISSN 0975-735X

गीत और नवगीत : अंतर्वस्तु विवेचना

डॉ॰ मनोरमा मिश्रा
विभागाध्यक्ष (हिंदी विभाग)
मिहिर भोज पी॰जी॰ कॉलेज दादरी, ग्रेटर नोएडा
गौतमबुद्ध नगर 203207 (उ॰प्र॰)

'वियोगी होगा पहला कवि, आह से निकला होगा गान' और इस आह से निकलने वाला गान ही गीत है आह है-भाव का स्फुटित आवेश। मानव मस्तिष्क के भावात्मक केंद्र में जब कोई भाव प्रबल होकर आवेश का रूप ले लेता है तब उसका प्रथम स्फुटन गुनगुनाते-गुनगुनाते, शब्द, वाक्य पद पाते-पाते लयात्मक होकर गीत कहलाता है। अर्थात किसी भावावेश के अंत:करण पर पड़ने वाले अंत:दबाब के फलस्वरूप उसके रिसाव से गुनगुनाकर जब मानव, स्फुटन के क्षण उन्मुक्त और उन्मादित हो गा उठता है, तब वही गान गीत कहलाता है। कहते हैं कि कविता शांति के क्षणों में स्मरण किए गए प्रबल संवेगों का नाम है और यदि कविता प्रबल संवेगों का नाम है तो गीत आवेश के क्षणों में स्फुटित होने वाली प्रबल प्रभुविष्णु शब्दार्थमय लयमय अंतर की अभिव्यंजना का नाम है। डॉ॰ जयनाथ नलिन लिखते हैं कि 'हृदय की सघन और निर्बाध अनुभूति जब शब्दों के घुँघुरू बाँध उद्याम वेग से स्वर-ताल की चपलता में लिपट नाचे उठती है तब यह गीत बन जाती है।'[1]

कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि गीत की अंतर्वस्तु मानवीय अंत:करण और उसके संवेग हैं, उसका संबंध मानवीय अंत:करण से है। लेकिन 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध तक आते-आते निर्मम आर्थिक संबंधों और संवेदनशून्य मानवीय बंधनों की स्थापना ने मानवीय अंत:करण का भी रूपांतर कर दिया।

निर्मम आर्थिक संबंधों और वैश्वीकरण के पाटों में पिसकर उसके चूर्ण से जिस नए मानव का निर्माण हुआ, वह अब अत्यधिक बहिर्मुखी निकला और व्यवसायिकता से भरे इस नवमानव के नवनिर्मित अंत:करण ने मानवीय संबंधों को विनाश के कगार पर ले जाकर खड़ा कर दिया। साहित्य में भी इस नए मानव के नए कविवर्ग ने जिस नवीन परिवेश से प्रसूत नवीन बोध को समेटकर जो नयी कविता लिखी, उसने संवेदना के पहलू पर तो कुछ हद तक तत्कालीन परिवेश को चित्रित किया लेकिन शिल्प के पहलू को अर्थ की लय की दुहाई देकर इसे भी (कविता को) विनाश कगार पर ला खड़ा किया। गद्यात्मक पंक्तियों को अर्थलय के नाम पर नयी कविता घोषित कर दिया गया। काव्य के आँगन में गद्यात्मकता का इतना झाड़-झंखाड़ खड़ा हो गया कि इस युग के प्रारंभिक दौर में जो भी सरस पौधे शिल्पगत और भावगत लयता लेकर, रूपांतरित मानव के रूपांतरित अंत:करण और रूपांतरित परिवेश के नवीन बोध को समेटकर खड़े हुए वे सहजता से पनप नहीं पाए। डॉ॰ शंभुनाथ सिंह[2] लिखते हैं कि 'नयी कविता की इस बाढ़ में सन् 1960 से 1980 के बीच इतनी मिट्टी जमा हो गयी, जिसे साफ करना किसी समीक्षक के बूते

ISSN : 2321-0443
UGC Care list Journal

सत्यमेव जयते

ज्ञान गरिमा सिंधु

(त्रैमासिक पत्रिका)

संयुक्तांक 66-67

(अप्रैल -जून एवं जुलाई-सितंबर, 2020)

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
शिक्षा मंत्रालय
(उच्चतर शिक्षा विभाग)
भारत सरकार
COMMISSION FOR SCIENTIFIC AND TECHNICAL TERMINOLOGY
MINISTRY OF EDUCATION
(DEPARTMENT OF HIGHER EDUCATION)
GOVERNMENT OF INDIA

परामर्श एवं संपादन मंडल

प्रधान संपादक

प्रोफेसर एम. पी. पूनियां

अध्यक्ष

संपादक

डॉ. प्रेमनारायण शुक्ल, सहायक निदेशक

संपादक मंडल

प्रो. आर. पी. पाठक
शिक्षा संकाय
श्री लाल बहादुर शास्त्री
राष्ट्रीय संस्कृत
विश्वविद्यालय, नईदिल्ली

डॉ. वेद प्रकाश
पूर्व सहायक निदेशक (भाषा)
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
भारत सरकार, नईदिल्ली

डॉ. अरविन्द नारायण मिश्र
सहायक प्रोफेसर,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय ,
हरिद्वार (उत्तराखंड)

श्री. के. के. सिंह
पूर्व उपनिदेशक (भाषा)
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
नई दिल्ली

डॉ. मनोरमा मिश्रा
सहायक प्रोफेसर ,हिंदी विभाग
मिहिरभोज पी.जी.कॉलेज ,गौतम बुद्ध नगर
उत्तर प्रदेश

डॉ. अमितकुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग,
आर्य कन्या डिग्री कॉलेज,
प्रयागराज, उ.प्र.

डॉ. गोपीनाथ शर्मा
पूर्व प्रोफेसर ,जगत गुरु रामानंदाचार्य सास्कृत विश्वविद्यालय
जयपुर (राजस्थान)

ज्ञान गरिमा सिंधु

(त्रैमासिक पत्रिका)

अंक 66-67

अप्रैल -जून एवं जुलाई-सितंबर , 2020

सत्यमेव जयते

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

शिक्षा मंत्रालय

(उच्चतर शिक्षा विभाग)

भारत सरकार

2020

COMMISSION FOR SCIENTIFIC AND TECHNICAL TERMINOLOGY

MINISTRY OF EDUCATION

(DEPARTMENT OF HIGHER EDUCATION)

GOVERNMENT OF INDIA

14	ऑनलाइन माध्यम से अधिगम ;चुनौतियाँ और समाधान	डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार	96
15	प्राचीन भारतीय शिक्षा में शिल्पों का शिक्षण-शास्त्र	डॉ. अजीत कुमार बोहत	103
16	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विविध आयाम	डॉ. मनोरमा मिश्रा	109
17	'शिक्षक विकास समन्वयक ' कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षकों की सतत व्यावसायिक शिक्षा : सिखाने की आजीवन यात्रा	डॉ. एम.एम. रॉय औरडॉ. मीना सहरावत	115
18	भारतीय ज्ञान-परंपरा में शिष्य की संकल्पना	डॉ. प्रवीण कुमार तिवारी	125
19	वर्तमान युग में मूल्यपरक शिक्षा	डॉ. के.सी. गौड़	134
20	किन्नरों के शैक्षणिक अधिकार : मानव अधिकारों के संदर्भ में	डॉ. प्रियंका सिंह एवं शोधार्थी सुधा मिश्रा	140
21	वर्तमान युग में राष्ट्रीय समस्याएं एवं समाधान	डॉ. सुनीता गौड़	150
	विविध- **ज्ञान-चर्चा :**		
1	प्रभामंडल	डॉ. विजय कुमार उपाध्याय	155
2	खिचड़ी - एक संपूर्ण और पौष्टिक व्यंजन	सतीशचन्द्रसक्सेना	159
3	पत्रिकाएँ (त्रैमासिक) Journals (Quarterly) बिक्रीसंबंधीनियम / Rules Regarding Sales		162
4	पत्रिकाकीसदस्यताहेतुग्राहक/ अभिदानफार्म		165
5	प्रकाशनविभागकेबिक्रीकेंद्र / Sale Counters of		166

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विविध आयाम

डॉ. मनोरमा मिश्रा

शिक्षा किसी भी राष्ट्र या समाज का केंद्रीय प्राणवायु है, शिक्षा और साक्षरता दो अलग-अलग चीजें हैं क्योंकि जहाँ साक्षरता अक्षर ज्ञान तक सीमित है, वहीं शिक्षा का अर्थ कहीं अधिक व्यापक है | यह मनुष्य और समाज के आचार-विचार, उसके जीवन शैली, उसके सामाजिक सरोकारों, मानवीय मूल्यों, प्रगति के उपादानों आदि को बहुत गहराई तक प्रभावित करती है। शायद इसीलिए एडमंड बर्क ने कहा था कि किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी सुरक्षा उसकी शिक्षा है। पुरानी शिक्षा नीतियाँ चाहे वह सर्जेंट योजना हो, चाहे 1952 का माध्यमिक शिक्षा आयोग हो, चाहे कोठारी कमीशन या फिर 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति हो, कहीं न कहीं ये सभी ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड के आस-पास ही घूमती रही हैं ,जबकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक वास्तविक अर्थ में समाज को साक्षर बनाने से आगे बढ़कर ,समाज को शिक्षित करने के व्यापक लक्ष्य पर आधारित है।

इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति की व्यापकता भारतीय समाज के निचले पायदानों तक जाती है। इन पायदानों में भारत के गाँवों से लेकर जन-जातियों, पिछड़े वर्गों तक का व्यापक क्षेत्र फैला हुआ है।

इस संदर्भ में स्वामी विवेकानंद की उक्ति उल्लेखनीय है - असली भारत गाँवों में बसता है।

जब तक हम जन जातियों एवं पिछड़े वर्गों के लोगों का उत्थान करने में सफल नहीं होंगे तब तक भारत का भविष्य उज्ज्वल नहीं होगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने विषमताओं को दूर करने पर विशेष बल दिया है और इसमें अब तक वंचित रहे लोगों की विशेष आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा के समान अवसर मुहैया कराने का प्रयास है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सकारात्मक पहलू :-

1. **महिलाओं की भागीदारी**

अतीत से चले आ रहे असंतुलन और विषमताओं को खत्म करने के लिए शिक्षा- व्यवस्था का स्पष्ट झुकाव महिलाओं के पक्ष में होगा। शिक्षा का उपयोग महिलाओं की स्थिति में बुनियादी परिवर्तन लाने के लिए एक साधन के रूप में किया गया है। यह नीति राष्ट्रीय शिक्षा-व्यवस्था में ऐसा प्रभाव डालेगी जिस से महिलाएँ समर्थ और सशक्त होंगी। नए मूल्यों की स्थापना के लिए शिक्षण संस्थाओं के सक्रिय सहयोग से पाठ्यक्रमों तथा पठन-पाठन सामग्री की पुनर्रचना की जाएगी तथा अध्यापकों व प्रशासकों का पुन: प्रशिक्षण किया जाएगा। महिलाओं से संबंधित अध्ययन को विभिन्न पाठ्यचर्याओं के भाग के रूप में प्रोत्साहन दिया जाएगा। इस काम को सामाजिक पुनर्रचना का अभिन्न अंग मानते हुए इसे

5

ISSN: 2705-4810

साहित्यलोक

भाषा, साहित्य, संस्कृति और साहित्यिक सिद्धान्त की अनुसंधानपरक शोध पत्रिका

वर्ष ४३ । अंक २ । सम्वत् २०७९ । ज्येष्ठ (सन् २०२२)

संगोष्ठी विशेषांक

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में राम और रामायण का स्वरूप

प्रधान सम्पादक
डॉ. संजीता वर्मा

सम्पादक
डॉ. सुमन रानी
संजय कुमार

सह सम्पादक
डॉ. श्वेता दीप्ति
प्रीति गुप्ता

हिन्दी केन्द्रीय विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कीर्तिपुर, नेपाल

15. देश-विदेश में महर्षि वाल्मीकि आश्रम 105
डॉ. मंजु रानी
16. जनार्दन गोस्वामी का काव्यगत परिचय 112
संदीप कुमार महतो
17. Status of Women in India; A Socio-Historical perspective 117
Dr Rajyalakshmi
18. अवधी भाषा में कृष्ण काव्य 128
विभा शुक्ला
19. समकालीन साहित्य मे सामाजिक प्रतिविम्ब 131
नीतू आर्य
20. सीता का वैशिष्ट्य 136
डॉ. श्वेता दीप्ति
21. रामकथा में जनकपुरधम और रामायण सर्किट की अवधरणा 143
डॉ. मंचला झा.
22. राम की शक्तिपूजा अर्थात् निराला के राम 150
कंचना झा
23. समन्वयवाद का सुन्दर संगम रामचरित मानस 155
पूनम झा
24. रामायण में राम का वियोग 160
मौसरी तिवारी सिंह
25. भानुभक्त और तुलसीदास के रामायण 165
प्रा. डिल्लीराम शर्मा संग्रौला
26. राम-काव्य की परम्परा में साकेत 171
विनोदकुमार विश्वकर्मा 'विमल'
27. निराला की राम की शक्ति पूजा 176
राजेन्द्र परदेसी
28. रामलीला : लोकपरम्परा का अनूठा रंग 182
डॉ. राजेश श्रीवास्तव
29. तुलसी और गाँधी के राम 186
डॉ. मनोरमा मिश्रा
30. रामचरित मानस में राष्ट्र-रक्षा संरचना 193
प्रो. शन्नो पाण्डेय
31. रामायण और जीवन मूल्य 200
डॉ. माखन लाल डबरिया
32. भारत में राम और रामायण के स्वरूप 203
मोहन सिंह

तुलसी और गाँधी के राम

डॉ. मनोरमा मिश्रा
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
मिहिर-भोज(पी.जी.) कॉलेज
दादरी, गौतम बुद्ध नगर, उ.प्र.

तुलसीदास के राम मर्यादा पुरुषोत्तम राम है और मानव के सन्निकट हैं। तुलसी के काव्य में राम के लौकिक और अलौकिक दोनों रूप प्रकट हुए हैं। अलौकिक रूप में राम विष्णु का अवतार भी हैं और निर्गुण, निर्विकार, निराकर ब्रह्म भी। अलौकिकरूप में वे निर्गुण ब्रह्म और सगुण विष्णु हैं तथा लौकिक रूप में दशरथ पुत्र अयोध्यापति राम।[1] बालकाण्ड में अवतार याचना के समय,[2] लंकाकाण्ड में युद्ध विजय के समय,[3] तथा उत्तरकाण्ड में राज्याभिषेक के समय[4] देवताओं और स्वयं वेदों के द्वारा राम का जो स्तुतिगान किया गया है, वह भी राम के परब्रह्म स्वरूप की स्थापना करता है। इस प्रकार तुलसी के राम त्रिदेव- ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों का एक रूप ब्रह्म स्वरूप है। राम ही त्रिदेव के रूप में सृजन, पालन और संहार करते हैं।[5] ये ब्रह्म स्वरूप राम काक[6] और कौशल्या[7] दोनों को ही विराट् रूप में दर्शन देते हैं और यही निर्गुण ब्रह्म भक्त के हितार्थ नररूप धारण कर अवतार ग्रहण करते हैं, स्वयं संकट झेलते हैं और सज्जनों को हर्षित करते हैं।[8] इसीलिए वे मर्यादा पुरुषोत्तम हैं और मानव मात्र के बहुत समीप हैं। "रामत्व ही तुलसी का परमादर्श है, जिसकी अवतारणा द्वारा ही जीवन और जगत की सारी प्रकृति में पूर्णता का विकास संभव है।"[9] जब एक आदर्श और उदात्त चरित्र का व्यक्ति समाज का नेतृत्व करता है तो बाह्य प्रकृति भी सहज रूप में सब प्रकार का वैभव चतुर्दिक बिखेर देती है। रामराज्य में प्रकृति की सानुकूलता इस तथ्य का प्रमाण है।[10] राम भारतीय आदर्श जनजीवन के प्रतिनिधि हैं, वे जब सुमेर पर्वत पर पहुँचते हैं तो वहाँ भी राम के हितार्थ अर्थात् मानव मात्र के हित में समस्त वृक्ष फलयुक्त हो जाते हैं।

"सब तरू फरे राम हित लागी।
रितु अरु कुरितु काल गति त्यागी।।"

- मानस 6/5/5

एक ओर तुलसी राम के व्यक्तित्व में आलौकिकता का दिग्दर्शन कराते चले हैं और दूसरी ओर उन्हें आदर्श मानव की भावभूमि पर अवतरित करते हैं। राम-द्रोही की रक्षा स्वयं ब्रह्मा और विष्णु भी नही कर सकते। जयन्त की कथा से यह तथ्य प्रकट होता है। देवत्तव और जीवत्तव पर तो राम का प्रभुत्व है ही, जड़ तव भी रामाज्ञा के अनगामी हैं। पत्थर की शिला नारी तन धारण कर ले,[11] समुद्र स्वयं मार्ग प्रदर्शित करें,[12] अग्नि सीता को धरोहर के रूप में अक्षत लोटा दे,[13] लंका-दहन में उनचास पवन सहायक बने[14] आदि प्रसंग जड़त्व पर उनके भी प्रभुत्व के परिचायक हैं। पर तुलसी को राम का यह अलौकिक, दिव्य, देवत्व रूप उतना ग्राह्य नही है जितना उनका मानव मात्र के हितार्थ, मानवता की रक्षार्थ और धर्म-संस्थापन के निमित्त लौकिक रूप

ISSN (Print) : 0975-7139
ISSN (Online) : 2394-9309

Aryabhatta J. Math. & Info.
R.N.I. No. HARENG-00685/07/01/2009TC

ARYABHATTA JOURNAL OF MATHEMATICS AND INFORMATICS

Scholarly Peer Reviewed Research Publishing System.

VOL. 13 No. 2 JULY-DEC., 2021

Indexed in Copernicus, Google Scholars, CNKI scholar, EBSCO Discover,
Indian Science Abstract (ISA) Indian Citation Index **(ICI)** Cite factor & indianjournals.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed International Journal

AN INTERNATIONAL JOURNAL DEVOTED TO RESEARCH & EDUCATIONAL ADVANCES IN

- MATHEMATICAL & STATISTICAL SCIENCES
- O.R., MANAGEMENT & ECONOMICS
- COMPUTER SCIENCE
- ENGINEERING PHYSICS
- BIO-MATHEMATICS
- INFORMATION TECHNOLOGY

Website : www.aryanseducationtrust.com (www.abjmi.com)

ISSUE ON
DEC. 3, 2021

ISSN (Print) : 0975-7139 , ISSN (Online) : 2394-9309

ARYABHATTA JOURNAL OF MATHEMATICS & INFORMATICS

Volume 13 | Number 2 | JULY-DEC., 2021

CONTENTS

ON THE PROBLEM OF AXIOMATIZATION OF GEOMETRY
Temur Z. Kalanov 151-166

PREVALENCE OF CARDIO VASCULAR DISEASE RISK FACTORS IN SUBURBAN OF CHENNAI, SOUTH INDIA : A COMMUNITY ASSESSMENT
N. Paranjothi, A. Poongothai, A. Poompavai, R. Lakshmi Priya and Manimannan G 167-176

INVENTORY MODEL FOR DETERIORATING ITEMS HAVING DEMAND RATE AS A POLYNOMIAL FUNCTION OF SELLING PRICE OF DEGREE FOUR WITH VARIABLE HOLDING COST
Neha Rani & Vinod Kumar 177-182

AN INTERESTING END-CORRECTION TECHNIQUE FOR ALTERNATING SERIES ESTIMATION
M. Devanand Mallayya 183-186

DIRECT FORMULAE FOR FINDING PARTICULAR INTEGRAL OF CERTAIN ORDINARY DIFFERENTIAL EQUATIONS WITH CONSTANT COEFFICIENTS
Dr. Rajasekhar Parameswara Iyer 187-196

ANALYSIS OF HETEROGENEOUS FEEDBACK QUEUE SYSTEM WITHAT MOST ONE REVISIT
Vandana Saini, Dr. Deepak Gupta 197-206

BUYER VENDOR FUZZY INVENTORY MODEL HAVING TIME VARYING HOLDING COST
Harish Kumar Yadav and T.P.Singh 207-214

GEOMETRIC SERIES GEOMETRY: ŚAṄKARA'S CONTRIBUTION
V. Madhukar Mallayya 215-226

SOME NEW TRILATERAL GENERATING RELATIONS INVOLVING I-FUNCTION
Sandeep Khare 227-234

PERFORMANCE MEASURES OF A NUCLEAR POWER PLANT
Dr. Sapna Nagar 235-246

ALLOCATION OF SUBJECTS IN AN EDUCATIONAL INSTITUTION BY ROBUST RANKING METHOD
Arun Pratap Singh 247-254

DIOPHANTINE EQUATION RELATED TO ARITHMETIC PROGRESSION
R. B. Singh & Megha Rani 255-258

EVALUATION OF BREAST SELF-EXAMINATION AND CLINICAL BREAST EXAMINATION AMONG RURAL FEMALE POPULATION IN TAMILNADU : A PILOT STUDY
N. Paranjothi, Manimannan G, A. Poongothai, Poompavai A, and R. Lakshmi Priya 259-264

A RHOMBIC SHAPED UWB ANTENNA WITH DUAL B AND-RECONFIGURABLE CHARACTERISTICS
Anuj Kumar, Nirdesh Kumar and Shubhra Dixit 265-274

(Super)(a, d) - H - ANTIMAGIC TOTAL LABELING OF SUPER SUB DIVISION OF CYCLE
Dr. Smita, A. Bhatavadekar 275-290

Aryabhatta Journal of Mathematics & Informatics Vol. 13, No. 2, July-Dec., 2021
Double-Blind Peer Reviewed Refereed International Journal ©www.abjmi.com

DOI No. : 10.5958/2394-9309.2021.00029.9
ISSN (Print) : 0975-7139
ISSN (Online) : 2394-9309

PERFORMANCE MEASURES OF A NUCLEAR POWER PLANT

Dr. Sapna Nagar
Assistant Professor, Department of Mathematics, Mihir Bhoj P.G. College, Dadri
E-mail : sapnanagar@gmail.com

ABSTRACT

In this paper, we have considered a nuclear power plant for the performance measure in terms of evaluation of availability, reliability and MTTF. A nuclear power plant among other things is useful in the production of electricity. The whole nuclear reactor is divided into five subsystems, numbered as (1) Reactor vessel, (2) Heat exchanger, (3) Turbine, (4) Condenser, (5) Generator , which are connected in series.

All failures follow exponential distribution whereas repairs obey general time distribution. A set of differential difference equations has been obtained as a mathematical modeling continuous w.r.to time and discrete w.r.to space. The ergodic behavior of the system along some particular cases have been discussed. The numerical illustration together with graphical diagram have been appended to highlight the important results of study.

Key Words: Availability, Reliability, MTTF, Performance measure.

1. INTRODUCTION

The main task of reactor vessel is to produce energy through fissioning of neutrons of nuclear fuel Uranium-235. This energy goes into heat exchanger through coolant and heat exchanger converts this energy into steam. This steam is used to rotate turbine and then it goes to condenser, which convert this again into water. This water gets back to heat exchanger. The turbine is connected to power generator, which produces the electricity. In the considered system, we take one standby redundant heat exchanger to improve system s availability. This standby heat exchanger is followed online through a perfect switching device. The whole system can fail due to failure of any of its subsystems. All the failures follow exponential time distribution while all the repairs follow general time distribution.

We have used supplementary variable technique to solve the system. System configuration diagram have shown through fig-1. A set of difference-differential equations has obtained which is continuous with respect to time and discrete with respect to space. Laplace transform has been used to solve these difference-differential equations and thus various transition-state probabilities have been obtained. Steady-state behaviour of the system and a particular case (when repairs follow exponential time distribution) has been appended at the end to illustrate practical utility of the model. Graphical illustration for a numerical example has been given at the end to highlight important results of the study.

NOTATIONS

$P_0(t)/P_2(t)$: Probability that the system is in operable state at time t due to working of original/ standby heat exchanger.

$P_1(j,t)\Delta$: Probability that the system is in failed state at time t due to

ISSN (Print) : 0973-[illegible]
ISSN (Online) : 2394-9309

ARYABHATTA JOURNAL OF MATHEMATICS AND INFORMATICS

Scholarly Peer Reviewed Research Publishing System.

VOL. 12 No. 2 JULY-DEC., 2020

Indexed in Copernicus, Google Scholars, CNKI scholar, EBSCO Discover, Indian Science Abstract (ISA) Indian Citation Index (ICI) Cite factor & indianjournals.com

Double-Blind Peer Reviewed Refereed International Journal

AN INTERNATIONAL JOURNAL DEVOTED TO RESEARCH & EDUCATIONAL ADVANCES IN

- MATHEMATICAL & STATISTICAL SCIENCES
- O.R., MANAGEMENT & ECONOMICS
- COMPUTER SCIENCE
- ENGINEERING PHYSICS
- BIO-MATHEMATICS
- INFORMATION TECHNOLOGY

Website : www.aryanseducationtrust.com (www.abjmi.com)

ISSUE ON DEC. 3, 2020

ISSN (Print) : 0975-7139 , ISSN (Online) : 2394-9309

ARYABHATTA JOURNAL OF MATHEMATICS & INFORMATICS

Volume 12	Number 2	JULY-DEC., 2020

CONTENTS

INFORMATION AND COMMUNICATION TECHNOLOGIES IN MATHEMATICS TEACHING
Dragan Obradovic, Lakshmi Narayan Mishra 97-112

PROPERTIES OF WEYL TENSOR AND COTTON TENSOR IN A RIEMANNIAN MANIFOLD
Monika Sati and K.C. Petwal 113-122

WEKA CLASSIFICATION AND PREDICTION OF COVID-19 PANDEMIC AFFECTED DISTRICTS OF TAMILNADU - A CASE STUDY
Manimannan G & R. Lakshmi Priya 123-134

INCLUSIVE DEVELOPMENT THROUGH MICRO, SMALL AND MEDIUM ENTERPRISES
Dr. Abhishek Kumar Jha 135-138

THE EPIDEMIC: SCENARIO & LEARNING
Dr. Sapna Nagar 139-148

CENTRIFUGE SYSTEM IN THERMAL POWER PLANT CONSIDERING IMPACT OF VARIOUS FAULTS ON PERFORMANCE : A REVIEW
Anil Kumari, Pooja Bhatia 149-154

FINITE DEFORMATION PROBLEMS : UNIFORM EXTENSION
Dr. Rajkala 155-158

APPLICATION OF INVERSE OF MATRIX IN NETWORK SECURITY
Arun Pratap Singh 159-164

MODULAR LABELING OF SOME CLASSES OF GRAPHS
K. Muthugurupackiam, S. Ramya 165-172

SOME PROPERTIES OF LOCAL FRACTIONAL MELLIN - FRACTIONAL DOUBLE LAPLACE TRANSFORM
R.V. Kene 173-180

(3, 2) - JECTION OPERATOR CRITERION IN HILBERT SPACE
Navin Kumar Singh 181-184

AUTOMATIC PREDICTION AND CROSS VALIDATION OF TEXTILE FABRICS DATA USING MACHINE LEARNING METHODS
R. Lakshmi Priya, Manimannan G, M. Salomi 185-198

AN INVENTORY COST MODEL WITH WEIBULL DISTRIBUTED DETERIORATION, SHORTAGES AND PARTIALLY BACKLOGGING USING TRAPEZODIAL FUZZY NUMBERS
Harish Kumar Yadav, T.P. Singh, Vinod Kumar 199-210

SOLUTION OF MULTI-OBJECTIVE LINEAR PROGRAMMING PROBLEM USING MODIFIED FOURIER ELIMINATION TECHNIQUE & AHA SIMPLEX ALGORITHM
S. Jain, A. Mangal 211-222

Aryabhatta Journal of Mathematics & Informatics Vol. 12, No. 2, July-Dec., 2020
Double-Blind Peer Reviewed Refereed International Journal ©www.abjmi.com

ISSN (Print) 0975-7139
ISSN (Online) 2394-9309

THE EPIDEMIC : SCENARIO & LEARNING

Dr. Sapna Nagar
Assistant Professor, Department of Mathematics, Mihir Bhoj (PG) College, Dadri Gautam Buddh Nagar U.P. -203207
E-mail : sapna.nagar3@gmail.com

ABSTRACT

In this Paper we present the study of Epidemic like the corona virus (COVID-19) outbreak have shaped politics, crushed revolutions, and entrenched racial and economic discrimination. Epidemics have also altered the societies they have spread through, affecting personal relationships, the work of artists and intellectuals, and the man-made and natural environment of recent scenario in Epidemics. This is a category of disease that seems to hold up the mirror to human beings as to who we really are. That is to say, they obviously have everything to do with our relationship to our mortality, to death, to our lives. They also reflect our relationships with the environment-the built environment that we create and the natural environment that responds. They show the moral relationships that we have toward each other as people, and we're seeing that to day.

INTRODUCTION

The coronavirus pandemic began as a simple outbreak in December 2019 in Wuhan, China. However, it quickly propagated to other countries and became a primary global threat. It seems that most countries were not prepared for this pandemic. As a consequence, hospitals were over- crowded with patients and death rates due to the disease skyrocketed. In particular, as of the time of this writing (20th May 2020), the coronavirus outcome resulted in over 4.2 million cases and over 280 thousand deaths worldwide as a cause of the induced disease, COVID-19.

In order to reduce the impact of the disease spread, most governments implemented social distancing restrictions such as closure of schools, airports, borders, restaurants and shopping malls [1].In the most severe cases there were even lockdowns - all citizens were prohibited from leaving their homes. This subsequently led to a major economic downturn: stock markets plummeted, inter- national trade slowed down, businesses went bankrupt and people were left unemployed. While in some countries the implemented restrictions had a significant impact on reducing the expected shock from the coronavirus, the extent of the disease spread in the population greatly varied from one economy to another.

A multitude of social and economic criteria have been attributed as potential determinants for the observed variety in the coronavirus outcome. Some experts say that the hardest hit countries also had an aging population [2,3] or an underdeveloped healthcare system [4,5]. Others emphasize the role of the natural environment [6,7]. In addition, while the developments in most of the countries follow certain common patterns, several countries are notably outliers, both in the number of officially documented cases and in number of diseased people due to the disease. Having in mind the ongoing debate, a comprehensive empirical study of the critical socio-economic determinants of the coronavirus epidemic country level outcome would not only provide a glimpse on their potential impact, but would also offer a guidance for future policies that aim at preventing the emergence of epidemics.

ISSN 2321-4945

UGC CARE LIST approved Research Journal

द्विभाषी राष्ट्रसेवक

वर्ष : 72 ● अंक : 1 ● अप्रैल : 2022

RNI NO. ASSBIL/2009/31008 ISSN : 2321-4945

एक हृदय हो भारत जननी

द्विभाषी राष्ट्रसेवक

भाषा, साहित्य, समाज, कला व संस्कृति विषयक शोध-पत्रिका

UGC CARE Listed Research Journal

वर्ष : 72 (आर.एन.आई. वर्ष : 15) अंक : 1 अप्रैल : 2022

प्रधान संपादक
डॉ. क्षीरदा कुमार शइकीया
मंत्री, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

संपादक
प्रो. मोहन
हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली-1

कार्यकारी संपादक
रामनाथ प्रसाद
प्रभारी साहित्य सचिव
असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी

अनुक्रम

हिंदी विभाग

- संपादकीय 5
- गाँधी जी का सत्यानुसंधान — डॉ. ऋता दीक्षित 7
- कीर्तन घोषा और सूरसागर के गोपी-उद्धव संवाद का तुलनात्मक अध्ययन — डॉ. जयश्री काकति 11
- समकालीन हिंदी साहित्य में भारतबोध : विशेषत: रघुवीर सहाय की कविता 'कैमरे में बंद अपाहिज' के संदर्भ में — डॉ. संतोष कुमार चतुर्वेदी 15
- समकालीन हिंदी कविता और धूमिल — सत्यंत यादव 19
- बौद्ध धर्म का क्रमिक विकास : बुद्ध, बौद्ध एवं नवबौद्ध — डॉ. संजय यादव 23
- असमीया उपन्यास की पृष्ठभूमि — स्मिता रजक 27
- विचित्र नाटक में युद्ध वर्णन एवं ऐतिहासिकता — डॉ. ज्योति कौर 31
- जलछबि : स्त्री जीवन की एक यथार्थ दस्तावेज — सिराजुल हक 38
- यह मुलक हमारा भी है क्या : तस्वीरन — सत्येंद्र पाण्डेय 43
- महात्मा गाँधी के पूर्वज : एक प्रामाणिक अध्ययन — सूर्य प्रकाश 48
- कहानी/कफन — प्रेमचंद 53

অসমীয়া বিভাগ

- চেতনা স্ৰোতৰ আলোকত ভূপেন্দ্ৰ নাৰায়ণ ভট্টাচাৰ্যৰ গল্প — ড° অম্বেৰ গগৈ, শ্ৰী গীতাশ্ৰী শইকীয়া 59
- নৱকান্ত বৰুৱাৰ শিশু সাহিত্য — বিকাশ দাস 73
- ভাসৰ 'স্বপ্নবাসৱদত্তা' নাটকৰ প্ৰথম অংকত ব্যৱহৃত প্ৰাকৃ সম্ভাষণ ঃ এক অধ্যয়ন — দীপামণি বৈশ্য 77
- অনুৰাগ আৰু এটা ছাতি (কবিতা) — ৰাজুমণি শইকীয়া 85

महात्मा गाँधी के पूर्वज : एक प्रामाणिक अध्ययन

✍ सूर्य प्रकाश

प्रस्तावना : भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को दिशा देने वाले प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों में महात्मा गाँधी का नाम सदैव अग्रणी रहा है। इनके बारे में अब तक सैकड़ों पुस्तकें एवं शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं, लेकिन इनके पूर्वजों के बारे में अभी तक विस्तृत एवं समग्र लेखन नगण्य हुआ है। प्रस्तुत शोध पत्र में महात्मा गाँधी के पूर्वजों के बारे में शोधपरक एवं प्रामाणिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

बीज शब्द : पोरबंदर, राजकोट, बांकानेर, दीवान, पूर्वज।

मूल आलेख : मोहनदास वैश्य या बनिया जाति के थे, जो मुख्यत: व्यापारियों की जाति होती थी।[1] इनके परिवार के पहले ज्ञात पूर्वज का नाम लालजी गाँधी था। ये मूलत: जूनागढ़ रियासत में भादर नदी के किनारे स्थित कुटियाना गाँव के निवासी थे, जहाँ लिंबाडा चौक के पास इनका घर था। इनके घर के पास ही 'खोखर दरबार' हवेली थी, जिसमें रहने वाले एक मुस्लिम खोखर परिवार के एस्टेट मैनेजर के रूप में नौकरी करते थे।[2] इसके बाद यह पोरबंदर में दफ्तरी या नायब दीवान के पद पर नियुक्त हुए। इन दिनों यह पद दीवान या प्रधानमंत्री का दाहिना हाथ माना जाता था। इसकी स्थिति वर्तमान में कैबिनेट में गृहमंत्री के समान होती थी। इनके पुत्र का नाम रामजी गाँधी था। रामजी गाँधी के पुत्र रहीदास गाँधी भी दफ्तरी के पद पर नियुक्त हुए। रहीदास गाँधी को जूनागढ़ के नवाब से थोड़ी भूमि उपहारस्वरूप प्राप्त हुई। रहीदास गाँधी के दो पुत्र थे – हरजीवन गाँधी और दमन गाँधी। ये दोनों ही पोरबंदर में दफ्तरी पद पर क्रमश: नियुक्त हुए। 1777 ई. में हरजीवन गाँधी (मोहनदास के परदादा) ने पोरबंदर में समुद्र तट से एक-चौथाई मील की दूरी पर एक घर एक विधवा ब्राह्मण महिला मानबाई से रु. 165 या 500 कौड़ी में खरीदा।[3]

हरजीवन गाँधी के बड़े पुत्र उत्तमचंद गाँधी को 'ओटा बापा' भी कहा जाता था। 'ओटा' शब्द इनके नाम के प्रथम अक्षर का संक्षिप्त रूप है और 'बापा' गुजरात में 'पिता' या 'किसी सम्मानित वरिष्ठ व्यक्ति' के लिए प्रयुक्त शब्द है। यह मोहनदास के दादाजी थे। इन्होंने 17 वर्ष की आयु में अपनी योग्यता के आधार पर पोरबंदर बंदरगाह पर सीमा शुल्क कलेक्टर की नौकरी प्राप्त की एवं खाली समय में यह अपने चाचा दमन गाँधी के कार्यालय में रहकर उनकी मदद करते थे, जिससे इन्हें रियासत के कामों का व्यापक अनुभव प्राप्त हुआ।[4]

एक दिन पोरबंदर के राणा हालोजी खिमोजीराज (1813ई.-1831ई.) ने दफ्तरी पद पर नियुक्त दमन गाँधी को बुलाने के लिए एक दूत भेजा, लेकिन वे अपने कार्यालय में नहीं थे। उनके कार्यालय में उपस्थित उत्तमचंद तुरंत उनकी ओर से राणा के दरबार में गए। राणा उनके आत्मविश्वास देखकर प्रभावित हुआ।[5] अगले ही दिन राणा ने उत्तमचंद को बुलाकर बताया कि माधवपुर का सीमा शुल्क कलेक्टर समय से राजस्व अदा नहीं कर रहा है। इस बर्ताव में उसे पोरबंदर के विरोधी राज्य जूनागढ़ का सहयोग प्राप्त हो रहा है।[6] इस समस्या के समाधान के लिए इन्होंने जूनागढ़ के प्रतिनिधियों से बातचीत की एवं उनसे एक समझौता किया। इन्होंने समझौते के तहत पोरबंदर राज्य के द्वीप जूनागढ़ को दे दिए, जबकि माधवपुर से पोरबंदर तक का तटीय किंतु

वर्ष 12, अंक 40, जनवरी -मार्च 2022

मूल्य ₹120/-

UGC Care Listed

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

ISSN-2321-1504 Nagfani RNI No. UTTHIN/2010/34408

नागफनी

अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य

नागफनी

A Peer Reviewed Referred Journal

(अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य)

UGC Care Listed त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

ISSN-2321-1504 Naagfani RNI No. UTTHIN/2010/34408

वर्ष 12 ,अंक 40 ,जनवरी - मार्च 2022

संपादक

सपना सोनकर

सह-संपादक

रूपनारायण सोनकर

कार्यकारी संपादक

डॉ. एन. पी. प्रजापति

प्रोफेसर बलिराम धापसे

अतिथि संपादक

प्रोफेसर दिनेश कुशवाह

सलाहकार मंडल (Peer Review Committee)

प्रोफेसर विष्णु सरवदे, हैदराबाद (तेलंगाना)
प्रोफेसर किशोरी लाल रैगर, जोधपुर (राजस्थान)
प्रोफेसर आर.जयचंद्रन तिरूअनंतपुरम (केरल)
डॉ. एन. एस. परमार, बड़ोदा (गुजरात)
डॉ. दिलीप कुमार मेहरा, बी.बी. नगर (गुजरात)
प्रोफेसर विजय कुमार रोड़े, पुणे (महाराष्ट्र)
प्रोफेसर संजय एल. मादार, धारवाड (कर्नाटक)
प्रोफेसर गोविन्द बुरसे, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ. दादासाहेब सालुंके, औरंगाबाद(महाराष्ट्र)
प्रोफेसर अलका गड़करी, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ. साहिरा बानो बी. बोरगल, हैदराबाद (तेलंगाना)
डॉ. बलविंदर कौर, हैदराबाद (तेलंगाना)
डॉ.उमाकांत हजारिका,शिवसागर (असम)

मुख पृष्ठ- डॉ.शेख आजम,मैत्री ग्राफिक्स,सावंगी (ह),औरंगाबाद

प्रकाशन/मुद्रण

प्रकाशक रूपनारायण सोनकर की अनुमति से डॉ. एन. पी. प्रजापति एवं प्रोफेसर बलिराम धापसे द्वारा
नमन प्रकाशन 423/A अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली 11002 में प्रकाशन एवं मुद्रण कार्य

संपादकीय / व्यवस्थापकीय कार्यालय

दून ल्यू काटेज स्प्रिंग रोड, मसूरी-248179, उत्तराखण्ड दूरभाष: 0135-6457809 मो. 09410778718

शाखा कार्यालय

पी.डब्ल्यू. डी.आर-62 ए, ब्लाक कालोनी बैढ़न, जिला-सिंगरौली म.प्र. 486886, मो. 097529964467

सहयोग राशि-150/- रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्क (संस्था के लिए)-1000, रुपये पंचवार्षिक सदस्यता शुल्क (व्यक्ति के लिए)-2000/- रुपये
पंचवार्षिक संस्था और पुस्तकालयों के लिए 3000/- रुपये, विदेशों में $50 आजीवन व्यक्ति 6000/- रुपये 10000/- रुपये

सदस्यता शुल्क एवं सहयोग राशि-इंडियन पोस्ट पेमेंट बैंक AC836710013838 IFSC Code-IPOS0000001 Branch -SIDHI(NIRAJ Prasad Prajapati)

नोट:- पत्रिका की किसी भी सामग्री का उपयोग करने से पहले संपादक की अनुमति आवश्यक है। संपादक - संचालक, पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यावसायिक है। **नागफनी** में प्रकाशित शोध-पत्र एवं लेख, लेखकों के विचार उनके स्वयं के हैं, जिनमें संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं। **"नागफनी"** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे। अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। सारे भुगतान मनीआर्डर बैंक चेक, बैंक ड्राफ्ट, ई-पेमेन्ट आदि से किये जा सकते हैं। देहरादून से बाहर के चेक में बैंक कमीशन 50/- अतिरिक्त जोड़ दें।

पृष्ठ क्रमांक

दलित विमर्श

1. नागफनी-सामाजिक क्रांति का दस्तावेज-डॉ.अभय परमार 217-221
2. गूँगा नहीं था मैं (कविता संग्रह) में अभिव्यक्त दलित चेतना- डॉ.जी.वी.रत्नाकर 221-223
3. बाजारवाद के आइने में 'सुअरदान' उपन्यास का विश्लेषण-डॉ.अजय कुमार 223-224
4. दलित कविता का सौन्दर्यबोध- डॉ.विशेष कुमार राय 225-227
5. आत्मकथात्मक कृति 'जूठन' में दलित व्यथा का चित्रण-डॉ.उदय भान भगत 228-230
6. समकालीन हिंदी काव्य में दलित समस्याओं का निरुपण-सूर्य प्रकाश 231-234
7. मानवता और परिवर्तन की सशक्त अभिव्यक्ति-'सूअरदान'-डॉ.गायत्री देवी जे.लालवानी 235-237
8. सूरजपाल चौहान की कहानियों में दलित नारी-डॉ.पारुल सिंह 237-240
9. कथ्य और शिल्प की नवीनता का उपन्यासः 'डंक'- डॉ.हेना 241-242
10. नागफनीः दलित प्रतिरोध का जीवंत दस्तावेज-जितेन्द्र विसारिया 243-247
11. वर्चस्ववादी मानसिकता और दलित साहित्य- डॉ.विलास साळुंके 248-251
12. डॉ.आंबेडकर : पुलिस, जासूस और अखबार की नजर मे-डॉ.अनिरुद्ध कुमार 252-253
13. तथागत गौतम बुद्ध के वर्ण और जाति व्यवस्था पर विचार-डॉ.धर्मराज पवार/डॉ.अंबादास बाकरे 254-256
14. दलित और आदिवासी साहित्य-विमर्शः एक तुलना-डॉ.सुषमा कुमारी 257-259
15. दलित चेतना और सुशीला टाकभौरे की कविता में नारी-ऊषा यादव 259-262
16. भारत विभाजन की त्रासदी एवं दलित विमर्श -सुकांत सुमन 263-267

English Discourse

1. An Ethnographic Introduction To The Nat : A Denotified Scheduled Castes of Chhattisgarh -Hemant Kumar 268-271
2. Complexity of Identity in August Wilson's *Radio Golf*-A.muthukumar/ Dr.v.anbarasl 272-275
3. Cultural Identity and Exploration of Multicultural-identity of Indo-Malaysians revealed in K.S.Maniam's *The Return*-A.Athiappan/ Dr.T.Gangadharan 276-279
4. Ecofeminism in India with special reference to Chipko Movement-aoyana Buragohain/Pallav Protim Mahanta 280-282
5. An Analytical Study on Autonomy Movement in Assam and Its Relevance- Golap Borah 283-286
6. Buranji Literature: A repository of history of medieval Assam-Monjit Gogoi/ Bismita Bora 287-289
7. Contributions of the Emerging Women Leadership in the Panchayati Raj Institutions(PRIs) towards Society: An Evaluative Analysis-Dr. Jayanta Baruah 290-293
8. Challenging Stereotypes:Altering the Stereotype of Dependent Woman in the Fictional works of Indian Women Novelists-Sonawane Tejal Mark 294-296
09. Locating the Supernatural in Contemporary Naga Society: A Reading of Select Short Stories of Avinuo Kire- Dr Breez Mohan Hazarika, 297-299
10. Understanding Jyotiba Phule as the Critic of Colonial Government and Indian Socio political Order-Dr. Umakanta Hazarika/ Dr. Shahiuz Zaman Ahmed 300-302
11. Education, Dalit Activism and Caste Politics in Akhila Naik's Bheda-Saraswathi G/ Dr. K. Suganthi 303-306
12. Ethnic Contestation And Conflicts In the Assam's Hill District of Dimahasao: A Case of Challenge to Peaceful Co-Existence -Dr. Lamkholal Doungel 307-311
13. A Study On Attitude Of Parents Towards Higher Education Of Girls Among Bhojpuri Community In Khowang Block, Dibrugarh District-Punam Koiri 312-322

समकालीन हिंदी काव्य में दलित समस्याओं का निरूपण

-सूर्य प्रकाश
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग,
मिहिर भोज पीजी कॉलेज, दादरी,
गौतम बुद्ध नगर, उत्तरप्रदेश मो.8171853145

प्रस्तावना :- भारतवर्ष में दलित शब्द का प्रयोग लगभग एक शताब्दी पूर्व से प्रचलित है इस सामाजिक वर्ग से आशय व्यक्तियों के उस समूह से है जो सामाजिक व्यवस्था में सबसे निचले पायदान पर आते हैं इन्हें वर्ण व्यवस्था में अछूत की श्रेणी में रखा गया है तथा वैधानिक उप बंधुओं के अंतर्गत इन्हें अनुसूचित जाति कहा गया है इस जाति के अधिकारों सम्मान प्रतिष्ठा की स्थापना के लिए प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत में विविध प्रयास होते रहे हैं लेकिन इन प्रयासों को सफलता की सफल परिणिति आधुनिक काल में ही कुछ हद तक संभव हो सके जब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ज्योतिबा फुले नारायण गुरु ई वी रामास्वामी बीआर शिंदे आदि ने भगीरथ प्रयास किए यद्यपि भारतीय संवैधानिक व्यवस्था के अंतर्गत दलित समाज को उनके अधिकारों प्रतिष्ठा आदि को पूर्णता संरक्षित करने का प्रयास किया गया है किंतु व्यवहार है आज भी यह वर्ग व्यवहारिक पटल पर अपनी अस्मिता की रक्षा की लड़ाई लड़ रहा है इस लड़ाई को कुछ आधुनिक हिंदी कवियों ने शब्द रूप में प्रस्तुत किया है जिसमें से जयप्रकाश कर्दम, सुशीला टाकभौरे, विमल थोरात, रजनी तिलक, श्यौराज सिंह बेचैन ओमप्रकाश वाल्मीकि, सूरजपाल चौहान, मोहनदास नैमिशराय आदि प्रमुख हैं दलित वर्ग की विवेद सामाजिक राजनीतिक आर्थिक समस्याओं के संदर्भ में इन हिंदी कवियों की लेखनी में उनकी पीड़ा के उद्गार प्रस्फुटित हुए हैं प्रस्तुत शोध पत्र में समकालीन हिंदी काव्य के अंतर्गत दलित वर्ग की विभिन्न समस्याओं पर व्यापक विमर्श प्रस्तुत किया गया है।

बीज शब्द:- दलित, उत्पीड़न, शोषण, अधिकार

मुख्य अंश:- भारतीय सामाजिक व्यवस्था में वर्ण व्यवस्था ऋग्वैदिक कालीन समाज में जीवन के सभी महत्वपूर्ण कार्यों को आपस में मिल बांट कर करने के कारण उपजी थी लेकिन धीरे-धीरे इस व्यवस्था में उत्पन्न जड़त्व दलित वर्ग के लिए दुखदाई सिद्ध हुआ। इस बारे में जयप्रकाश कर्दम ने अपनी कविता 'वर्णवाद का पहाड़ा' में लिखा है-

हमें पढ़ाया
प्रगति का रास्ता दिखाया
लेकिन समता के मार्ग पर तुम
खुद नहीं चल पाए
हम ने रखा तुम्हें
वर्ण और जाति से ऊपर
पर तुम नहीं उठ पाए तुम अपनी
जातीय अहमन्यता की संकीर्णता से।[1]

इसी प्रकार दलितों के साथ होने वाले अन्याय पर सूरजपाल चौहान अपनी कविता ' फिर बात न करते' में कहते हैं-

काश तुम किसी दलित के घर पैदा होते विशेषकर
दलितों में दलित कहे जाने वाले भंगी के घर
तुम्हें उठानी पड़ती बजबजाती गंदगी
और ढोना पड़ता, गू-मूत से भरा टोकरा
सिर पर रखकर।[2]

दलित समाज में अशिक्षा भी एक सामाजिक समस्या के रूप में ओवरी है जिस कारण उनका प्रगति के विविध आयामों में योगदान अधूरा प्रतीत होता है। अशिक्षा के कारण ये शोषण व उत्पीड़न का शिकार हुए हैं। जयप्रकाश कर्दम ने अपनी कविता अदालत में कुछ इस तरह व्यंग्य किया है

लगवा कर अंगूठा कोरे कागज पर,
हड़पते आए हो तुम, मेरे घर जमीन
लूटते आए हो, मेरे गाय-भैंस तक।[3]

दलित समाज की अशिक्षा का मार्मिक चित्रण सूरजपाल चौहान ने अपनी कविता गांधी जी का हरिजन है में इस तरह किया है

इसको तो कुछ पता नहीं है
स्कूल कॉलेज क्या होता
देसी थैली डाल हलक में
दिनभर गफलत में रहता
बालक इसके अनपढ़ रह गए
ज्ञान का खाली बर्तन है।[4]

RNI No.-UPHIN/2010/35514

ISSN-0976-349X

इतिहास दृष्टि

2021

संयुक्तांक 18-19

संपादक : सैयद नजमुल रज़ा रिज़वी

RNI No.-UPHIN/2010/35514
संयुक्तांक : 18-19

ISSN-0976-349X
नवंबर 2021

यू.जी.सी. केयर लिस्ट में सम्मिलित

इतिहास दृष्टि

संपादक
सैयद नजमुल रज़ा रिज़वी

संपर्क
228-आर, पूरबी बशारतपुर
निकट एच.एन. सिंह क्रॉसिंग
गोरखपुर-273004

डी-15/16, फ्लैट नं. 302, ओखला विहार
जामिया नगर, नई दिल्ली-110025

11. मोहम्मद अली जिन्ना—एक राष्ट्रवादी के अलगाववादी बनने की परिस्थितियां 140
— *सूर्य प्रकाश*

12. कोविड-19 महामारी के दौरान लखनऊ के महिला मुरिकारी कारीगरों द्वारा सामना की जाने वाली बाधाएं एवं चुनौतियां 150
— *रेशमा उमैर एवं सतेंद्र कुमार मिश्रा*

पुस्तक समीक्षा

शीइज्म : आइडेंटिटी, स्कालर्स, एजुकेशन एंड कल्चर 160
— *सैयद नजुमल रज़ा रिजवी*
समीक्षक : शम्स तबरेज़

द हिस्ट्री ऑफ थार डिजर्ट : इन्वायरोमेंट, कल्चर एंड सोसायटी 163
— *मनीषा चौधरी*
समीक्षक : डॉ. रमा शंकर सिंह

मोहम्मद अली जिन्ना : एक राष्ट्रवादी के अलगाववादी बनने की परिस्थितियां

सूर्य प्रकाश

सन् 1947 में भारत का धार्मिक आधार पर दो भागों में विभाजन एक युगांतकारी घटना थी। इसके लिए मुख्य रूप से मोहम्मद अली जिन्ना को दोषी माना जाता है। उन पर आरोप है कि उन्होंने मुस्लिम हितों के स्थायी संरक्षण हेतु भारत भूमि से पाकिस्तान नामक देश का निर्माण कराया और यह तथ्य एक हद तक सही भी है लेकिन हम उनके अतीत पर दृष्टिपात करें तो यह ज्ञात होता है कि वे मूलतः उदारवादी थे, मॉर्ले के उदारवाद से प्रभावित थे, कांग्रेस के नरम दल के सदस्य थे, दादा भाई नौरोजी के सचिव, प्रशंसक व अनुयायी थे, आरंभिक मुस्लिम लीग के धुर विरोधी थे, सरोजिनी नायडू के अनुसार हिंदू-मुस्लिम एकता के दूत थे, वहीं गोपाल कृष्ण गोखले भी उनके सांप्रदायिक सौहार्द-भाव के मुक्तकंठ से प्रशंसक थे लेकिन यही मोहम्मद अली जिन्ना बाद में अपनी सांप्रदायिक नीति के कारण एक नए मुस्लिम देश की पहल का नेतृत्व करते हैं। स्पष्ट है कि ऐसी कुछ परिस्थितियां अवश्य रही होंगी जिसने हिंदू-मुस्लिम एकता के समर्थक इस राष्ट्रवादी व्यक्ति को अलगाववाद की राह पर धकेल दिया। प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदू-मुस्लिम एकता व राष्ट्रीय आंदोलन में उनके योगदान के साथ-साथ उन परिस्थितियों व कारकों का विवेचन किया गया है जिसने मोहम्मद अली जिन्ना को अलगाववाद का कट्टर समर्थक बना दिया।

मोहम्मद अली जिन्ना उद्यमी, शांतचित्त, महत्वाकांक्षी, अंतर्मुखी तथा कम भावनात्मक लगाव वाले व्यक्ति थे। उन्होंने अपने पिता जिन्नाभाई पूंझा के जहाजरानी व्यवसाय में सक्रिय योगदान देने हेतु अपने पिता के मित्र व डगलस ग्राहम एंड कंपनी के जनरल मैनेजर सर फैड्रिक क्राफ्ट से संपर्क किया तथा दो वर्ष के लिए सवैतनिक प्रशिक्षण हेतु लंदन चले गए लेकिन दादा भाई नौरोजी के प्रोत्साहन से वे लंदन में कानून के छात्र बने तथा उनमें राजनीति में अपना भविष्य बनाने की तीव्र इच्छा जाग्रत हुई।[1] जुलाई 1892 में ब्रिटेन में फिंसबरी संसदीय सीट से दादाभाई नौरोजी मात्र 3 वोटों से विजयी हुए। नौरोजी के ब्रिटिश संसद में प्रथम भाषण का जिन्ना पर गहरा प्रभाव पड़ा तथा 1934 तक जिन्ना नरमवादी तथा नौरोजी के संवैधानिक उपागम से जुड़े रहे।[2] दादा भाई नौरोजी के अतिरिक्त जिन्ना ब्रिटेन में प्रखर